IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 2, Issue 3, November 2022
Impact Factor: 6.252

रवि कुमार गोंड़ के काव्य में निहित आदिवासी समाज : एक अवलोकन

लालजीत राम

असि० प्रोफेसर- हिन्दी

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, आलापुर, अम्बेडकरनगर, उ०प्र०

शोध सारांश:- रवि कुमार गौड़ के काव्य में आदिवासी समाज का चित्रण संवेदनशीलता, यथार्थ और प्रतिरोध की चेतना के साथ उभरकर सामने आता है। उनके काव्य में आदिवासी जीवन की सरलता, प्रकृति के साथ गहरा संबंध और सामुदायिक संस्कृति का जीवंत रूप दिखाई देता है। वे जंगल, पहाड़, नदी और भूमि को केवल संसाधन नहीं, बल्कि जीवन का अभिन्न अंग मानते हैं। गौड़ अपने काव्य में यह भी दर्शाते हैं कि किस प्रकार आदिवासी समाज शोषण, विस्थापन और उपेक्षा का सामना करता रहा है। उनकी कविताओं में आधुनिक विकास की अंधी दौड़ के कारण आदिवासी अस्मिता पर पड़ने वाले खतरे को स्पष्ट रूप से उजागर किया गया है। वे सत्ता और व्यवस्था द्वारा किए जा रहे अन्याय के विरुद्ध स्वर उठाते हैं तथा आदिवासी जीवन के संघर्ष, पीड़ा और स्वाभिमान को अभिव्यक्ति देते हैं। साथ ही, उनके काव्य में आदिवासी संस्कृति, परंपराओं और लोकजीवन की गरिमा को भी महत्व दिया गया है। इस प्रकार, रवि कुमार गौड़ का काव्य आदिवासी समाज के यथार्थ का सशक्त दस्तावेज प्रस्तुत करता है, जिसमें उनकी पहचान, संघर्ष और अस्तित्व की रक्षा की भावना प्रमुख रूप से उभरती है।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in